CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अथ माध्यन्दिनीयः

कर्मकाण्ड-मन्त्रसङ्ग्रहः

[प्रथमो भागः, सामान्याध्यायः]

रचयिता—पं० श्रीगोपालचन्द्रमिश्रः, काशी ।

पं० गंग दत्त शास्त्री
जहांगीराबाद २२३६४

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समर्पणम्

स्वयक्तपरिग्रहाणामपि कृतशास्त्रग्रहाणाम्, सर्वतन्त्रस्वतन्त्राणामपि तन्त्रपरतन्त्राणाम्, समञ्जीकृतकापायाणामपि सम्युपासितपीताम्बराणाम्, परिहृतद्वेषाणामपि अज्ञानध्वान्त-विद्वेषिणाम्, पर्यस्तपरिजनानामपि परिवृतजनानाम्, विद्या-विद्वत्-तदनुरागि-जनकल्याणाशंसिनां, नैरु-दुरूह-ग्रन्थिल-ग्रन्था-गूहन-श्रम-लेख-ललितानाम्, तर्ककर्कशधिषणाधावनभीषणानाम्, वैदिकमार्गप्रतिष्ठापनश्रद्धालूनाम्, दतियावनखण्डी-पीताम्बरापीठविहारिणाम्, अप्रकाशितास्थानना-मानां, श्रद्धेयानां स्वामिपादानाम् अभ्युदयावह-सरसा-मोघ-पक्ष्मोत्क्षेपसम्पादनायायं माध्यन्दिनीयः कर्मकाण्डमन्त्रसंग्रहः करसरसीरुहेषु सश्रद्धमर्प्यते,

विनीतेन—

श्रीगोपालचन्द्रमिश्रेण

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

B.B.Sharma
29.7.83

माध्यन्दिनीयः
कर्मकाण्डमन्त्रसङ्ग्रहः

[प्रथमो भागः, सामान्याध्यायः]

समुचयोगि-भूमिका-विनियोग-मन्त्र-सूच्यादिसहितः

प्रकाशकः—महनीयचरितः पं० श्रीरामनारायणवैद्यः झाँसी

ग्रन्थकर्ता—याज्ञिकवरेण्यः पं० श्रीगोपालचन्द्रमिश्रः

वेद-धर्मशास्त्र-मीमांसाचार्यः, एम० ए, प्राध्यापकः

काशी हिन्दू विश्वविद्यालयस्य

पं० प्रेम दत्त शास्त्री
जहांगीराबाद २०३२२४

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

म० सं० ॥२॥

प्र० भा०

विषयानुक्रमः

प्रकरणम्	मन्त्रसंख्या	पृष्ठसंख्या
१—समर्पणम् (मुखपृष्ठे)		
२—विषयानुक्रमः		२
३—दो शब्द (म० म० पं गिरिधरशर्मा चतुर्वेदी जी)		३
४—भूमिका (पं० श्री गोपालचन्द्र मिश्र जी)		४-८
५—विनियोगसूची (मन्त्र संहितास्थल-पृष्ठ-निर्देशसहिता)		९-१६
१—स्वस्तिवाचनम्	१-१३ [१३]	१-६
२—देवपूजा	१४-५५ [४२]	७-२६
३—पुरुषसूक्तपूजानुवाकः	५६-७१ [१६]	२७-३२
(क) भोजनाध्यायः	५६-७७ [२२]	२७-३५
(ख) उत्तरनारायणमन्त्राः	७१-७७ [६]	३३-३५
४—रुद्रपूजानुवाकः	७८-९३ [१६]	३५-४१
५—नवग्रहमन्त्राः	९४-१०२ [९]	४१-४५
६—तिलक-वरण-रक्षाबन्धन-आशीर्वाद-मन्त्राः	१०३-१०८ [६]	४५-४८
७—श्रीसूक्तम् (देवीपूजामन्त्राः)	१०९-१२३ [१६]	४८-५१
८—पुस्तकपरिचयः		५१-५२

॥२॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दो शब्द

वर्तमान में स्मार्त कर्मकाण्ड के यथार्थ जानने वाले बहुत ही अल्प हो गये हैं। जो श्रद्धालु आस्तिक जन अपने यहाँ विधिपूर्वक परम्परानुसारी सस्वर वेदमन्त्रों के उच्चारण के साथ कर्मकाण्ड कराना चाहते हैं उन्हें उपनयन विवाह आदि संस्कार एवं श्राद्ध प्रतिष्ठा आदि विशेष कर्म कराने वाले भी बड़ी कठिनता से प्राप्त होते हैं। इससे भी वास्तविक कर्मकाण्ड का लोप-सा होता जारहा है। इस दुर्दशा को मिटाने के लिए श्रीवैद्यनाथ आयुर्वेद भवन के प्रतिष्ठापक और अध्यक्ष पं० श्रीरामनारायणजी वैद्य के हृदय में प्रेरणा हुई और कुछ विचार विमर्श हुआ, जिस के फल-स्वरूप काशी, एवं मथुरा में अध्ययन-अध्यापन व्यवस्था के साथ तदुपयोगी पुस्तक प्रकाशन की धारणा हुई।

प्रारम्भिक दशा में जिन स्वस्तिवाचन देवपूजा आदि मन्त्रों का सर्वसाधारण के लिए विशेष उपयोग होता है अभी उनका यह सुन्दर संग्रह, विद्वान् उत्साही कर्मकाण्डी आचार्य पं० श्रीगोपालचन्द्र मिश्र प्राध्यापक काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से करवा कर मुद्रित किया जा रहा है।

आशा है इससे तथा भविष्य में प्रकाशित होने वाली पुस्तकों से वेद-कर्मकाण्ड-श्रद्धालु आस्तिक जनों को, विशेषतः पढने वाले, एवं कराने वाले सज्जनों को सस्वर वेदमन्त्र का अभ्यास करने में बहुत लाभ होगा, और इस योजना से कर्मकाण्ड की प्रवृत्ति सुरक्षित रहेगी, साथ ही उक्त पं० रामनारायणजी वैद्य इस सुयश के भागी, तथा श्रद्धालु आस्तिक जनता की कृतज्ञता एवं हार्दिक धन्यवाद के भाजन होंगे।

वाराणसी
नागपञ्चमी २०१९

गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी
[महामहोपाध्याय]

पं० गेंदा दत्त शास्त्री
जहांगीराबाद २०२३६४
बुलन्दशहर (उ०प्र०)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूमिका

[कर्मकाण्ड और यह संग्रह]

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। समाज का जीवन क्रियाशीलता है। क्रिया या कर्म का मुख्य ध्येय आत्मसन्तोष होना है। आत्मा का वास्तविक बोध तत्वज्ञान से होता है। तत्वज्ञान की पूर्णता सत् चित् आनन्द की सर्वत्र व्यापकता का सार्वकालिक अनुभव है। तत्वज्ञानी होने पर मनुष्य सामाजिक रहते हुए भी लोकमुक्त है—इस अनुक्रम के परिशीलन में ही समाज के जीवन रूप से कर्मकाण्ड की महत्ता ज्ञात होती है।

इसमें सन्देह नहीं, कि भारतवर्ष में ऐसे अनेक तत्वज्ञानी हो चुके हैं जो आत्मा का अनुभव सर्वव्यापक रूप से करते थे। इसीलिए भारतीय संस्कृति में तत्वज्ञ महर्षियों के कर्मकाण्ड के विस्तृत विवेचन, महत्व तथा निर्देश उपलब्ध हैं। आत्मा का प्रकाश सर्वत्र रहते हुए भी शरीर की विशेषता से उसके (=आत्मा के) अनुभव के साधन विभिन्न प्रकार के हो जाते हैं—यही अधिकार का विचार है।

इस कर्मकाण्ड एवं अधिकार संबन्धी तत्वज्ञ महर्षियों की समझ का लोकोपकार के लिए स्मृतियों में विशेष रूप से वर्णन किया है।

खान से निकाला हुआ सोना या मणि अपनी सत्ता एवं मूल्य सुस्थिर रखता हुआ भी व्यावहारिक चमक या गौरव के लिए अनुरूप कर्मकाण्ड (=संस्कार या शोधन) की अपेक्षा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रखता है। इसी प्रकार प्रत्येक प्राणी अपने वास्तविक गौरव को व्यावहारिक जगत् में विकसित करने के लिए कर्मकाण्ड का आसरा लेता है। चाहे वह आधुनिक पाश्चात्य शिक्षा-आचार प्रभावित तर्कप्रिय मस्तिष्क की प्रत्यक्ष अनुमान की सीमा में हो, या श्रद्धाप्रधान आस्तिक तत्वजिज्ञासु की शास्त्र वचन की सीमा में हो, किसी न किसी रूप में कर्म की महत्ता सबको देनी ही पड़ती है। फलतः किसी भी मानव का या उसके मानसिक स्तर का मूल्याङ्कन कराने वाला समाजहित के उद्देश्य से या अपने हित को द्वार रखकर होने वाला शोधनात्मक या संस्कारात्मक कार्य [जैसे दूसरे के लिए सत्कार या त्याग (=देवपूजा), संयम या सेवा (=संगतिकरण) एवं दान के प्रकार की क्रिया] करना ही 'कर्मकाण्ड' है जो 'सहज यज्ञ' है। जिसका आश्रय सभी को कभी न कभी किसी न किसी तरह लेना ही पड़ता है।

बस—इसी रहस्य को मनुष्य जीवन के साथ दूध पानी की तरह एक रूपता देने के लिए तत्वज्ञ लोकहितैषी व्यक्तियों ने कर्मकाण्ड का विकास किया, समादर किया। इसलिए जिस देश में जितनी गहराई से विचार हुआ वहां उतना ही कर्मकाण्ड का व्यापक और ठोस रूप हुआ और उसे धर्म या संस्कृति के साथ जोड़ दिया गया। इसलिए कर्मकाण्ड एक यजमान अर्थात्—व्यक्ति मात्र के हित के लिए नहीं अपितु साक्षात् या परंपरया लोकहित के लिए है। हां—अपना हित, प्रवृत्ति का द्वार अवश्य है। साधारण बुद्धि मनुष्य--ऊंचे विचारों की महत्ता तब देता है जब उसकी मूल प्रवृत्तियाँ = जो जन्ममरण शीलतारूप मृत्युलोक की योनियों की साहजिक भोग क्षमता के रूप में विद्यमान है = की पूर्त्ति कर लेता है। अतः कर्मकाण्ड के मूल रहस्य (=आत्मानुभव) में अड़चन देनेवाले कुसंस्कारों (मल) को हटाकर मनःशुद्धिको बल देने की बात को छिपाकर (तुलना कीजिए या० स्मृ० १।८) साधारण स्तर के व्यक्तियों-जिनकी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संख्या सर्वदा अत्यधिक रहती है--को प्रवृत्त करने के लिए कामना का प्रलोभन देकर कर्मकाण्ड किया कराया जाता है।

नित्य नैमित्तिक कर्मकाण्ड की भांति काम्य कर्मकाण्ड भी अधिकार सामर्थ्य रहते हुए फल प्राप्ति की प्रबल लालसा से नहीं किन्तु व्यावहारिक उपादेयतार्थ खाना पूरी के रूप में अर्थात् निष्काम भाव से किया जाता है तो उसकी लोककल्याणकारिता या लोकसंग्रह के कारण महत्ता अधिक है। पर यदि ऐसा निष्काम कर्म करना किसी से संभव नहीं हो तो भी शास्त्रानुसार कर्त्ता व्यक्ति को तो कर्मकाण्ड का फल मिलेगा ही साथ ही में इस धर्मानुष्ठान से लोकस्थिरता भी बनी रहती है। इसलिए किसी भी व्यक्ति को कभी भी कर्मकाण्ड की उपेक्षा नहीं करनी चाहिये, भले ही उसके फल की उपेक्षा हो जाय। जैसा कि यहां के उद्धृत कुछ वचनों से भी स्पष्ट होता है—

'कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥'—ईशावास्योपनिषद् २;
'धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा।'—तैत्तिरीयश्रुति;
'यज्ञदानतपःकर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत्।
यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम्।
एतान्यपि तु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा फलानि च।
कर्त्तव्यानीति मे पार्थ निश्चितं मतमुत्तमम्॥'—१८।५-६।
'यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः।'—गीता ३।९;

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर्मकाण्ड में मूलतः दो विभाग हैं—एक श्रौत, दूसरा स्मार्त। श्रौत कर्मकाण्ड का यथा-विधि अहिताग्नि व्यक्ति ही अधिकारी है। आज धर्मप्राण भारतवर्ष में आहिताग्नियों का मिलना, होना असंभव सा हो गया है। जनसाधारण में स्मार्त कर्मकाण्ड की ही जानकारी, व्यवहार या आदर है।

कर्मकाण्ड कराने का अधिकार व्यवहारतः और शास्त्रतः ब्राह्मण जाति को है परन्तु जानकारी एवं मन्त्राभ्यास का अधिकार उपनीत त्रैवर्णिक मात्र को है। आज पण्डिताई वृत्ति करने वालों से अतिरिक्त ब्राह्मणों ने तथा क्षत्रिय वैश्यों ने आवश्यक कर्मकाण्ड की जानकारी भी छोड़ दी है।

आज किसी को इतना समय नहीं कि वह पूरी अपनी वेद की शाखा का अध्ययन कर सकें। यदि कुछ मन्त्राभ्यास या जानकारी की इच्छा हुई तो कोई ऐसा उपयोगी व्यवहार में अधिकतया काम आनेवाले कर्मकाण्ड के मन्त्रों का संग्रह उपलब्ध नहीं था जिससे इच्छा की पूर्ति की जा सके। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए उत्तर भारत में सर्वाधिक समादृत माध्यन्दिन शाखा के कर्मकाण्डोपयोगी मन्त्रों का यह संग्रह प्रस्तुत किया गया है।

इस संग्रह को कई भागों में उपयोगिता या कर्मकाण्डीय प्रवृत्ति का मनोवैज्ञानिक शैली से स्तर समझ कर पूरा करने का विचार किया गया है। अभी आपकी सेवा में 'सामान्याध्याय' नाम से प्रथम भाग उपस्थित किया गया है।

इसके विषयानुक्रम तथा विनियोग सूची से इसकी उपयोगिता का स्वभावतः अनुमान हो जायगा और विनियुक्त मन्त्रों का आधार 'स्मार्तपीयूष' [स्वतन्त्र पुस्तक] से ज्ञात हो जायगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आशा है भारतीय वेदाधिकारी व्यक्ति इसका समादर करके अपनी और देश की संस्कृति रक्षा में अपेक्षित बल प्राप्त कर सकेंगे।

इस प्रकाशन में प्रेस के कम्पोज की असुविधा के कारण (यथा सङ्ग्रह का संग्रह) द्वित्वादिनिर्देश, भिन्नस्तरीय अक्षर-मात्रा-चिन्हों का योजन, मानव सुलभ असावधानी के कारण स्वर-व्यञ्जन-मात्रा-लेखन-व्यत्यास होना यत्र तत्र यत् किञ्चित् संभव है, उसे पाठकों को सुधार लेना चाहिए।

अन्त्य में मैं इस भाग के समाप्ति में प्रकाशित श्लोकों के भाव की ओर ध्यान आकृष्ट कराता हुआ भारत की गौरव प्राप्त संस्था श्रीवैद्यनाथ आयुर्वेद भवन के संस्थापक एवं अध्यक्ष पं० रामनारायण वैद्य जी का अधिक आभार मानता हूँ, जिनके उत्साह से यह सेवा मुझ से बन सकी।

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, कर्मकाण्डात् सदा हितात्॥

इति शुभम्।

विद्यानिलयः
३२।१७ ब्रह्मनाल
वाराणसी १.

निवेदक, भवदीय—
श्रीगोपालचन्द्र मिश्र

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विनियोगसूची

कर्मनाम	संग्रहस्थ मंत्रसंख्या	मन्त्रः			संग्रहस्थ पृष्ठसंख्या
पवित्रधारणम्	१	पवित्रेस्थो	१	१२	१
			४	४	
स्वस्तिवाचनम्	२	आनोभद्राः	२५	१४	२
२-१३ [१२]	३	देवानां भद्रा	२५	१५	२
	४	तान् पूर्वया	२५	१६	३
	५	तन्नो वातो	२५	१७	३
	६	तमीशानम्	२५	१८	३
	७	स्वस्ति नः	२५	१९	४
	८	पृषदश्वा	२५	२०	४
	९	भद्रं कर्णेभिः	२५	२१	५
	१०	शतमिन्नु शरदः	२५	२२	५
	११	अदितिर्द्यौः	२५	२३	५
	१२	द्यौः शान्तिः	३६	१७	६
	१३	यतोयतः	३६	२२	६

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर्मनाम	संग्रहस्थ—मंत्रसंख्या	मन्त्रः	संहितायाः अ०	म०	संग्रहस्थ पृष्ठसंख्या
गणपतिपूजनम्	१४	गणानान्त्वा	२३	१९	७
गौरीपूजनम्	१५	अम्बेऽअम्बिके	२३	१८	७
विष्णुपूजनम्	१६	इदं विष्णुः	५	१५	८
शिवपूजनम्	१७	नमः शम्भवाय	१६	४१	८
प्रतिष्ठा	१८	मनो जूतिः	२	१३	८
आसनम्	१९	अदित्यै व्युन्दनम्	२	२	९
पाद्यम्	२०	त्रीणि पदा	१४	४३	९
अर्घ्यम्	२१	धामन्ते	१७	९९	१०
आचमनीयम्	२२	इमम्मे वरुण	२१	१	१०
स्नानम्	२३	द्रुपदादिव	२०	२०	१०
पयःस्नानम्	२४	पयः पृथिव्याम्	१८	३६	११
दधिस्नानम्	२५	दधिक्राव्णः	२३	३२	११
घृतस्नानम्	२६	घृतम्मिमिक्षे	१७	८८	१२
मधुस्नानम [३]	२७	मधुव्वाताः	१३	२७	१२
	२८	मधु नक्तम्	१३	२८	१३
	२९	मधुमान्नः	१३	२९	१३
शर्करास्नानम्	३०	अपाश्शुरसम्	९	३	१३

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding by MoE-Gol

कर्मनाम	संग्रहस्थ मंत्रसंख्या	मन्त्रः	संहिताङ्काः अ०	म०	संग्रहस्थ पृष्ठसंख्या
पञ्चामृतस्नानम्	३१	पञ्च नद्यः	३४	११	१५
शुद्धोदकस्नानम्	३२	शुद्धवालः सर्व	२४	३	१४
वस्त्रम्	३३	सुजातो ज्योतिषा	११	४०	१५
यज्ञोपवीतम्	३४	यज्ञो देवानाम्	८	४	१५
गन्धः	३५	त्वाङ्गन्धर्वाः	१२	९८	१६
अक्षताः	३६	अक्षन्नमीमदन्त	३	५१	१६
पुष्पम्	३७	ओषधीः प्रति	१२	७७	१७
दूर्वाः	३८	काण्डात् काण्डात्	१३	२०	१७
बिल्वपत्रम्	३९	नमो बिल्मिने	१६	३५	१७
तुलसीदलम्	४०	शिवो भव	११	४५	१८
परिमलद्रव्याणि	४१	अहिरिव भोगैः	२९	५१	१८
सिन्दूरम्	४२	सिन्धोरिव	१७	९५	१९
धूपः	४३	धूरसि धूर्व	१	८	१९
दीपः	४४	अग्निर्ज्योतिः	३	९	२०
नैवेद्यम्	४५	अन्नपतेन्नस्य	११	८३	२१
करोद्वर्तनम्	४६	अ६.शुनाते	२०	२७	२१
ताम्बूलम्	४७	याः फलिनीर्या	१२	८९	२१

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मंत्रनाम	संग्रहस्थ—मंत्रसंख्या	मन्त्रः	संहितायाः अ०	म०	संग्रहस्थ पृष्ठसंख्या
दक्षिणा	४८	हिरण्यगर्भःसम्	२५	१०	२२
आरार्तिक्यम्	४९	इद६.हविः	१६	४८	२२
	५०	आरात्रिपार्थिव६.	३४	३२	२३
प्रदक्षिणा	५१	ये तीर्थानि	१६	६१	२३
पुष्पाञ्जलिः	५२	यज्ञेनयज्ञम्	३१	१६	२४
	५३	राजाधिराजाय			२४
	५४	स्वस्तिसाम्राज्यम्			२४
	५५	विश्वतश्चक्षुः	१७	१९	२६
❀ आवाहनम्, ध्यानं वा	५६	सहस्रशीर्षा	३१	१	२७
आसनम्	५७	पुरुषऽएवेदम्	३१	२	२७
पाद्यम्	५८	एतावानस्य	३१	३	२७
अर्घ्यम्	५९	त्रिपादूर्ध्वः	३१	४	२८
आचमनीयम्	६०	ततो ऽविराड	३१	५	२८
स्नानम्	६१	तस्माद्यज्ञात्सर्व	३१	६	२९
वस्त्रम्	६२	तस्माद्यज्ञात्०ऋचः	३१	७	२९

❀ पौरुषाध्यायस्य ५६-७७ [२२] ब्रह्मार्पणे (भोजने) विनियोगः। पौरुषानुवाकस्य (= पुरुष-सूक्तस्य) ५६-७१ [१६] विष्णुपूजने सर्वदेवपूजने विष्णुयज्ञस्वाहाकारे च विनियोगः।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Siddhanta eGangotri Gyaan Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर्मनाम	मन्त्र संख्या
यज्ञोपवीतम्	६३
गन्धः	६४
पुष्पम्	६५
धूपः	६६
दीपः	६७
नैवेद्यम्	६८
ताम्बूलम्	६९
प्रदक्षिणा	७०
पुष्पाञ्जलिः	७१
	७२
	७३
	७४
	७५
	७६
	७७
† आवाहनम्, ध्यानं वा	७८
आसनम्	७९

मन्त्रः	अ०	मं०	पुष्पसंख्या
तस्मादश्वा	३१	८	२९
तं यज्ञम्	३१	९	३०
यत्पुरुषम्	३१	१०	३०
ब्राह्मणोस्य	३१	११	३०
चन्द्रमा मनसो	३१	१२	३१
नाभ्याऽआसीत्	३१	१३	३१
यत्पुरुषेण	३१	१४	३२
सप्तास्यासन्	३१	१५	३२
यज्ञेन यज्ञम्	३१	१६	३२
अद्भ्यः सम्भृतः	३१	१७	३३
वेदाहमेतं	३१	१८	३३
प्रजापतिश्चरति	३१	१९	३४
यो देवेभ्यः	३१	२०	३४
रुचम्ब्राह्मम्	३१	२१	३४
श्रीश्च ते	३१	२२	३५
नमस्ते रुद्र	१६	१	३५
या ते रुद्र	१६	२	३६

† रुद्रानुवाकस्य ७८-९३ [१६] शिवपूजायां, रुद्रयज्ञस्वाहाकारे च विनियोगः।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर्मनाम	संग्रहस्थ— मंत्रसंख्या	मन्त्रः	संहितायाः अ०	म०	संग्रहस्थ पृष्ठसंख्या
पाद्यम्	८०	यामिषुम्	१६	३	३६
अर्घ्यम्	८१	शिवेनवचसा	१६	४	३६
आचमनीयम्	८२	अद्धयवोचदधि	१६	५	३७
स्नानम्	८३	असौयस्ताम्रो	१६	६	३७
वस्त्रम्	८४	असौयोवसर्पति	१६	७	३७
यज्ञोपवीतम्	८५	नमोस्तु नील	१६	८	३८
गन्धः	८६	प्र मुञ्च	१६	९	३८
पुष्पम्	८७	विज्यन्धनुः	१६	१०	३८
धूपः	८८	या ते हेतिः	१६	११	३९
दीपः	८९	परि ते धन्वनो	१६	१२	३९
नैवेद्यम्	९०	अवतत्य धनुः	१६	१३	३९
ताम्बूलम्	९१	नमस्तऽआयु	१६	१४	४०
प्रदक्षिणा	९२	मा नो महान्त	१६	१५	४०
पुष्पाञ्जलिः	९३	मा नस्तोके	१६	१६	४०
सूर्यपूजनम्	९४	आ कृष्णेन	३३	४३	४१
चन्द्रमःपूजनम्	९५	इमं देवा	१०	१८	४२
मङ्गलपूजनम्	९६	अग्निर्मूर्द्धा	३	१२	४२

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding: KS-MoE-Granted

कर्मनाम	संग्रहस्थ— मंत्रसंख्या	मन्त्रः	संहितायाः अ०	म०	संग्रहस्य पृष्ठसंख्या
बुधपूजनम्	९७	उद्बुध्यस्व	१५	५४	४३
बृहस्पतिपूजनम्	९८	बृहस्पते परि	२६	३	४३
शुक्रपूजनम्	९९	अन्नात्परि	१९	७५	४४
शनिपूजनम्	१००	शन्नो देवी	३६	१२	४४
राहुपूजनम्	१०१	कया नः	३६	४	४५
केतुपूजनम्	१०२	केतुङ्कृण्वम्	२९	३७	४५
तिलकम्	१०३	युञ्जन्ति ब्रध्न	२३	५	४५
,,	१०४	युञ्जन्त्यस्य	२३	६	४६
वरणम्	१०५	व्रतेन दीक्षा	१९	३०	४६
रक्षाबन्धनम्	१०६	यदाबध्नन्दाक्षा	३४	५२	४६
आशीर्वादः	१०७	दीर्घायुस्त	१२	१००	४७
,,	१०८	पुनस्त्वा	१२	४४	४७
* श्रीसूक्तम् [१६]	१०९—१२४	हिरण्यवर्णां	ऋग्वेदपञ्चममण्डलान्ते परिशिष्टम		
आवाहनम् ध्यानं वा	१०९	हिरण्यवर्णां हरिणीं			४८
आसनम्	११०	तां म आ वह			४९
पाद्यम्	१११	अश्वपूर्वांरथमध्यां			४९

* श्रीसूक्तस्य १०९- १२४ [१६] देवीपूजायां, लक्ष्मीयज्ञस्वाहाकारे च विनियोगः ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर्मनाम	संग्रहस्थ—मंत्रसंख्या	मन्त्रः	संग्रहस्थ पृष्ठसंख्या
अर्घ्यम्	११२	कां सोस्मितां	४
आचमनीयम्	११३	चन्द्रां प्रभासां	४६
स्नानम्	११४	आदित्यवर्णे	४९
वस्त्रम्	११५	उपैतु मां	४६
अलङ्करणम्	११६	क्षुत्पिपासामलां	५०
गन्धः	११७	गन्धद्वारां	५०
पुष्पम्	११८	मनसःकाम	५०
धूपः	११९	कर्दमेन प्रजा	५०
दीपः	१२०	आपः स्रजन्तु	५०
नैवेद्यम्	१२१	आर्द्रां पुष्करिणीं	५०
ताम्बूलं, प्रदक्षिणा च	१२२	आर्द्रां यः करिणीं	५१
पुष्पाञ्जलिः	१२३	तां म आवह	५१
जपः	१२४	यः शुचिः प्रयतो	५१

सूचीयं विनियोगानां मन्त्र— तत्स्थलदर्शिका।
अदृष्टपूर्वा सूत्राद्या सन्तोषाय विदां भवेत्॥

—श्रीगोपालचन्द्रमिश्रः।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

याज्ञिकाचार्यश्रीगोपालचन्द्रमिश्रसंगृहीतः,

माध्यन्दिनीयकर्मकाण्ड—मन्त्रसंग्रहः ।

❀ प्रथमो भागः ❀

हरिः ॐ । पवित्रे स्थः । पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्य्यस्य रश्मिभिः ॥ तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ॥ १ ॥

[१] पवित्रधारणमन्त्रः ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आनः÷ । आनोभद्राःक्रतवोयन्तुविश्वतोद-
ब्धासोऽअपरीतासऽउद्भिदः÷ ॥ देवानोय-
थासदमिद्वृधेऽअसन्नप्रायुवोरक्षितारोदिवे
दिवे।२।देवानांम्भद्रा।देवानांम्भद्द्रासुमति-
र्ऋजूयतान्देवानांꣳरातिरभिनोनिवर्त्तताम्॥
देवानांꣳसख्यमुपसेदिमावयन्देवानुऽआ-
युःप्रतिरन्तुजीवसे॥३॥तान्पूर्व्वया। तान्पू-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

र्व्वयानि॒विदा॑हूमहेव॒यम्भगा॑म्मि॒त्रमदि॑ति॒न्द-
क्ष॑म॒स्स्रिध॑म् ॥ अ॒र्य्य॒मणं॒व्वरु॑ण॒ꣳसोम॑म॒श्वि-
ना॒सर॑स्वतीनꣳसु॒भगा॒मय॑स्करत् ॥४॥ तन्न॑ः ।
तन्नो॒व्वातो॑मयो॒भुव्वा॑तुभेष॒जन्तन्न्मा॒तापृ॑थि॒-
वीतत्त्पि॒ताद्द्यौः ॥ तद्ग्रावा॑णꣳसोम॒सुतो॑म-
यो॒भुव॒स्तद॑श्विनाशृणुतन्धिष्ण्यायु॒वम् ।५।
तमीशा॑नम् । तमीशा॑न॒ञ्जग॑तस्त॒स्त्थुष॒स्प-
ति॑न्धियञ्जि॒न्न्वमव॑सेहूमहेव॒यम् ॥ पू॒षानो॒-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यथा॒व्वेद॑सा॒मस॑द्वृ॒धेर॑क्षि॒तापा॒युरद॑ब्धः स्व॒स्तये॑ ॥६॥ स्व॒स्तिन॑ः । स्व॒स्त्तिन॒ऽइन्द्रो॑ वृ॒द्धश्श्र॑वाः स्व॒स्त्तिन॑ः पू॒षाव्वि॒श्श्ववे॑दाः ॥ स्व॒स्त्तिन॒स्त्ताक्ष्र्यो॒ऽअरि॑ष्टनेमिः स्व॒स्त्तिनो॒बृह॒स्पति॑र्द्दधातु ॥७॥ पृष॑दश्वाम॒रुत॑ः । पृष॑दश्श्वाम॒रुत॒ः पृश्नि॑मातरः शुभं॒य्यावा॑नो व्वि॒दथे॑षु॒जग्ग्म॑यः ॥ अ॒ग्ग्नि॒जि॒ह्वामन॑व॒ः सूर॑चक्षसो॒व्विश्श्वे॑नोदेवाऽअव॒साग॑मन्नि॒ह ॥८॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भद्रङ्कर्णेभिः । भद्रङ्कर्णेभिःशृणुयामदेवा
भद्रम्पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ॥ स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहिदेवहितंयदायुः ॥ ९ ॥ शतमित् । शतमिन्नुशरदोऽअन्ति
देवायत्रानश्चक्राजरसन्तनूनाम् ॥ पुत्रासो-
यत्रपितरोभवन्तिमानोमुद्धयारीरिषतायुर्ग
न्तोः ॥ १० ॥ अदितिर्द्यौः । अदितिर्द्यौरदि
तिरन्तरिक्षमदितिर्म्मातासपितासपुत्रः ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding by MoE-Grant-2

विश्वेदेवाऽआदित्यः पञ्चजनाऽआदितज्जा-
तमदितिर्जनित्वम्॥ ११॥ द्यौः शान्तिः। द्यौः
शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवीशान्ति-
रापः शान्तिरोषधयः शान्तिः॥ वनस्पतयः
शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्वꣳ
शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सामाशान्तिरेधि
॥ १२॥ यतोयतः। यतोयतः समीहसेततो
नोऽअभयङ्कुरु॥ शन्नः कुरुप्रजाभ्योभयन्नः

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पशुभ्य÷ ॥ १३ ॥ गुणानान्त्वा । गुणानान्त्वा
गुणपतिꣳहवामहेप्रियाणान्त्वाप्रियपतिꣳ
हवामहेनिधीनान्त्वानिधिपतिꣳहवामहेव्व-
सोमम ॥ आहमजानिगर्भ्भधमात्त्वमजा-
सिगर्भ्भधम् ॥ १४ ॥ अम्बेऽअम्बिके ।
अम्बेऽअम्बिकेम्बालिकेनमानयातिकश्चन ॥
ससस्त्यश्वक꣑ सुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्

पं० प्रेम दत्त शास्त्री
जहांगीराबाद २०२३६४
Kirtikant Sharma Collection, Rajagarh)

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

॥ १५ ॥ इदंविष्णुः । इदंविष्णुर्विचक्र-
मेत्त्रेधानिदधेपदम् ॥ समूढमस्यपाꣳसुरे-
॥ १६ ॥ नमः शम्भवायं । नमः शम्भवा-
यंचमयोभवायंचनमः शङ्कायंचमयस्क-
रायंचनमः शिवायंचशिवतरायच ॥ १७ ॥
मनोजूतिः । मनोजूतिर्जुषतामाज्ज्यंस्यबृह
स्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टंयज्ञꣳ समि-

[१५] गौरीमन्त्रः । [१६] विष्णुमन्त्रः । [१७] शिवमन्त्रः ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मन्दधातु॥ विश्वेदेवासऽइहमादयन्तुमो३ँ-
म्प्रतिष्ठ ॥ १८ ॥ अदित्यैव्व्युन्दनम् । अ-
दित्यैव्व्युन्दनमसिविष्णोस्तुपोस्स्यूर्ण्णं-
म्म्रदसन्त्वास्तृणामिस्स्वासुस्थान्देवेभ्यो-
भुवंपतयेस्स्वाहाभुवंनपतयेस्स्वाहाभूता-
नाम्पतयेस्स्वाहा॥ १९॥ त्रीणिपदा । त्रीणि-
पदाविचक्रमेविष्णुर्ग्गोपाऽ अदाभ्यः ।

[१८] प्रतिष्ठामन्त्रः । [१९] आसनमन्त्रः ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

GC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अतोधर्म्माणिधारयन् ॥२०॥ धामन्ते। धा-
मन्तेव्विश्वमभुवनमाधिश्रितमन्तः समु-
द्रेहृद्यन्तरायुषि । अपामनीकेसमिथेय
आभृतस्तमश्यामधुमन्तन्तऽऊर्म्मिम्
॥ २१ ॥ इमम्मे। इमम्मेव्वरुणश्रुधीहवमु-
द्यार्चमृडय । त्वामवस्युरार्चके ॥ २२ ॥
द्रुपदादिवमुमुचानः । द्रुपदादिवमुमुचानः

१०।

[२०] पाद्यमन्त्रः । [२१] अर्घमन्त्रः । [२२] आचमनमन्त्रः ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्विन्नः स्नातोमलादिव ॥ पूतम्पवित्रेणे-
वाज्ज्यमापः÷ शुन्धन्तुमैनंसः ॥२३॥ पयः÷
पृथिव्याम्। पयः÷ पृथिव्याम्पयऽओषधी-
षुपयोदिव्युन्तरिक्षेपयोधाः॥ पयस्वतीः
प्रदिशः÷सन्तुमह्यम् ॥ २४ ॥ दधिक्रा-
व्णोऽअकारिषम्। दधिक्राव्णोऽअकारिष-
ञ्जिष्णोरश्वस्यवाजिन÷ ॥ सुरभिनोमु-

[२३] स्नानमन्त्रः । [२४] दुग्धस्नानमन्त्रः ।

पं० भीम दत्त शास्त्री
जहांगीराबाद २०२३९४
बुलन्दशहर (उ प्र)
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खा॑कर॒त्प्रण॒ऽआयूꣳ॑षितारिषत् ॥ २५ ॥ घृ॒तम्मि॑मिक्षे । घृ॒तम्मि॑मिक्क्षे घृ॒तम॑स्स्य॒योनि॑र्घृ॒तेश्श्रि॒तो घृ॒तम्म्व॑स्स्य॒धाम॑ ॥ अ॒नु॒ष्व॒धमाव॑हमा॒द॑यस्स्व॒स्स्वाहा॑कृतंव्वृषभव्वक्षिह॒व्व्यम् ॥ २६ ॥ मधु॒व्वाता॑ः । मधु॒व्वाता॑ऽऋताय॒ते मधु॑क्क्षरन्ति॒ सिन्ध॑वः ॥ माद्ध्वी॑र्न्नः स॒न्त्वोष॑धीः ॥ २७ ॥ मधु॒नक्त॑म् ।

[२५] दधिस्नानमन्त्रः । [२६] घृतस्नानमन्त्रः । [२७-२९] मधुस्नानमन्त्रः ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मधुनक्तमुतोषसोमधुमत्पार्त्थिवꣳरजः ॥
मधुद्द्यौरस्स्तुनः पिता ॥ २८ ॥ मधु-
मान्नः। मधुमान्न्नोव्वनस्प्पतिर्म्मधुमाँ२ ॥
ऽअस्त्तुसूर्य्यः ॥ माद्ध्वीर्ग्गावोभव-
न्तुनः ॥ २९ ॥ अपाꣳरसम् । अपाꣳ
रसमुद्द्वयसꣳसूर्य्येसन्तꣳसमाहितम् । अ-
पाꣳरसस्स्ययोरसस्तंव्वोगृण्ह्णाम्म्युत्तममु-
पयामगृहीतोसीन्द्रायत्त्वाजुष्टङ्गृण्ह्णाम्म्ये-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

षतेयोनिरिन्द्रायत्त्वाजुष्टंतमम् ॥ ३० ॥
पञ्चनद्यः÷सरस्वतीमपियन्तिसस्रोतसः ॥
सरस्वतीतुपञ्चधासोदेशेभवत्सरित् ॥३१॥
शुद्धवालःसर्व्वशुद्धवालः। शुद्धवालःसर्व्व-
शुद्धवालोमणिवालस्त्तऽआश्विनाश्श्येत-
ं÷श्येताक्षोरुणस्तेरुद्रायंपशुपतयेकृष्णा-
ग्रीवाऽअंवलिप्तारौद्रानभोरूपाःपार्ज्ज-

[३०] शर्करास्नानमन्त्रः। [३१] पञ्चामृतस्नानमन्त्रः।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न्याः ॥३२॥ सुजा॑तो॒ज्ज्योति॑षा । सुजा॑-
तो॒ज्ज्योति॑षास॒हशर्म्म॒व्वरू॑थ॒मास॑द॒त्स्वः॑ ।
व्वासो॑ऽअग्ग्नेव्वि॒श्श्वरू॑प॒ꣳ संव्व्य॑यस्स्व-
व्विभावसो ॥ ३३ ॥ य॒ज्ज्ञोदे॒वाना॑म् ।
य॒ज्ज्ञोदे॒वाना॒म्म्प्रत्त्ये॑तिसु॒म्म्नमादि॑त्त्यासो॒-
भव॑तामृड॒यन्त॑ः ॥ आवो॒र्व्वाची॑सुम॒तिर्व्व॑-
वृत्त्याद॒ꣳहोश्च्च॒द्द्याव्व॑रिवो॒वित्त॒रास॑दा-

[३२] शुद्धोदकस्नानमन्त्रः । [३३] वस्त्रमन्त्रः ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दि॒त्त्येब्भ्य॑स्त्त्वा ॥ ३४ ॥ त्वाङ्ग॑न्ध॒र्व्वाः ।
त्त्वाङ्ग॑न्ध॒र्व्वाऽअ॑खनँ॒स्त्त्वामिन्द्र॒स्त्त्वाम्बृह॒-
स्प्पति॑ः ॥ त्त्वामो॑षधे॒सोमो॒राजा॑व्वि॒द्द्वा-
न्न्यक्क्ष्मा॑दमुच्च्यत ॥ ३५ ॥ अक्क्ष॒न्नमी॑-
मी॑मदन्त । अक्क्ष॒न्नमी॑मदन्त॒ह्यव॑प्प्रि॒या-
ऽअ॑धूषत ॥ अस्त्तो॑षत॒स्स्वभानवो॒व्विप्प्रा॒न-
वि॑ष्ठयाम॒तीयोजा॒न्न्वि॒न्द्रते॒हरी॑ ॥ ३६ ॥

[३४] यज्ञोपवीतमन्त्रः । [३५] गन्धमन्त्रः । [३६] अक्षतमन्त्रः ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओषधीः प्रति । ओषधीः प्रतिमोदद्ध्वम्पुष्पवतीः प्रसूवरीः ॥ अश्वाऽइवसजित्वरीर्वीरुधः÷पारयिष्ण्वः÷॥३७॥ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती । काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्तीपरुषः परुषस्परि ॥ एवानोदूर्वेप्रतनुसहस्रेणशतेनच ॥३८॥ नमोबिल्मिनेच । नमोबिल्मिनेचकवचिनेचनमोव्वर्म्मिणे

[३७] पुष्प-माला-मन्त्रः । [३८] दूर्वामन्त्रः ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant 2

चव्वरू॒थिने॑च॒नम॑ः श्श्रु॒ताय॑चश्श्रुतसे॒नाय॑
च॒नमो॑दुन्दु॒ब्भ्या॒यचाहन॒न्न्या॒यच॥ ३९ ॥
शि॒वोभ॑व । शि॒वोभ॑वप्प्र॒जाब्भ्यो॒मानु॑षी-
ब्भ्य॒स्त्वम॑ङ्गिरः ॥ माद्द्यावा॑पृथि॒वीऽअ॒-
भिशो॑ची॒र्म्मान्तरि॑क्ष॒म्माव्वन॒स्प्पती॑न् ॥४०॥
अहि॑रिवभो॒गैः । अहि॑रिवभो॒गैः पर्य्ये॑तिबा॒-
हुञ्ज्याया॑हे॒तिम्प॑रि॒बाध॑मानः॥ह॒स्त॒ग्घ्नोव्वि-

[३९] बिल्वपत्रमन्त्रः । [४०] तुलसीमन्त्रः ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्वा॑व्व॒युनो॑नि॒व्वि॒द्वान्न्पु॒मा॒न्न्पु॒माᳬं॑स॒म्परि॑-
पातुव्वि॒श्वत॑ः ॥४१॥ सिन्धो॑रिवप्प्राद्ध्व॒ने ।
सिन्धो॑रिवप्प्राद्ध्व॒नेशू॑घ॒नासो॒व्वात॑प्प्रमियः
पतयन्तिय॒ह्वाः ॥ घृ॒तस्स्य॒धारा॑ऽ अरु॒षोन
व्वा॒जीकाष्ठा॑भि॒न्दन्नू॒र्म्मिभि॒ः पिन्न्व॑-
मानः ॥४२॥ धूर॑सि । धूर॑सि॒धूर्व्व॒धूर्व्व॑न्त॒-
न्धूर्व्व॒तंयो॒स्म्मान्न्धूर्व्व॑ति॒तन्धू॑र्व्व॒यंव्व॒यन्धू-

[४१] नानापरिमलद्रव्यमन्त्रः । [४२] सिन्दूरमन्त्रः ।

पं० प्रेम दत्त शास्त्री
जहांगीराबाद २०२३९४
बुलन्दशहर (उ प्र)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

र्व्वामः ॥ देवानामसि वह्नितमꣳ सस्नितम-
म्पप्रितमञ्जुष्टतमन्देवहूतमम् ॥ ४३ ॥
अग्निर्ज्ज्योतिः । अग्निर्ज्ज्योतिर्ज्ज्योतिर-
ग्निः स्वाहासूर्य्योर्ज्ज्योतिर्ज्ज्योतिः सूर्य्यः
स्वाहा ॥ अग्निर्व्वर्च्चोर्ज्ज्योतिर्व्व
र्च्चः स्वाहासूर्य्योव्वर्च्चोर्ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः
स्वाहा ॥ ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्योर्ज्ज्योतिः

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्स्वाहा॑ ॥४४॥ अन्न॑प॒तेन्न॑स्य । अन्न॑प॒तेन्न॑स्स्यनोदेह्यनमी॒वस्स्य॑शु॒ष्मिण॑ः । प्रप्प्र॑दा॒तार॑न्तारिष॒ऽऊर्ज्ज॑न्नोधेहिद्वि॒पदे॒चतु॑ष्प्पदे ॥ ४५ ॥ अ॒ꣳशुना॑ते । अ॒ꣳशुना॑ते अ॒ꣳशुः पृ॑च्यता॒म्परु॑षा॒परु॑ः ॥ ग॒न्धस्त्ते॒सोम॑मवतु॒मदा॑य॒रसो॒ऽअच्च्यु॑तः ॥ ४६ ॥ याः फ॒लिनी॑ः । याः फ॒लिनी॒र्य्याऽअ॑फ॒लाऽ-

[४४] दीपकमन्त्रः । [४५] नैवेद्यमन्त्रः । [४६] करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनमन्त्रः ।

पं० प्रेम दत्त शास्त्री

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अ॑पु॒ष्प्पायाश्च॑ऽपु॒ष्प्पिणी॑ः ॥ बृह॒स्प्पति॑-
प्प्रसूता॒स्त्तानो॑मुञ्च॒न्त्वꣳह॑सः ॥ ४७ ॥
हि॒र॒ण्ण्य॒ग॒र्ब्भः सम्। हि॒र॒ण्ण्य॒ग॒र्ब्भः सम॑वर्त्त॒-
ताग्ग्रे॑भू॒तस्य॑जा॒तः पति॒रेक॑ऽआसीत् ॥
सदा॑धारपृथि॒वीन्द्यामु॒तेमाङ्कस्स्मै॑दे॒वाय॑ह॒-
विषा॑व्विधेम ॥ ४८ ॥ इ॒दꣳह॒विः ।
इ॒दꣳह॒विः प्प्र॒जन॑नम्मेऽअस्त्तु॒दश॑वीर॒ꣳ

[४७] ताम्बूलमन्त्रः। [४८] दक्षिणामन्त्रः।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सर्व्वगणꣳस्वस्तये ॥ आत्क्मसनिप्प्रजा-
सनिपशुसनिलोकसन्न्यभयसनि ॥ अग्निः
प्प्रजाम्बहुलाम्मेकरोत्त्वन्न्नम्पयोरेतोऽ-
अस्म्मासुधत्त ॥ ४९ ॥ आरात्रि ।
आरात्त्रिपार्त्थिवꣳरजः पितुरप्प्रायिधा-
मभिः ॥ दिवः सदाꣳसिबृहतीव्वितिष्ठसऽ-
आत्त्वेषंव्वर्त्ततेतमः ॥५०॥ येतीर्त्थानि ।

[४९-५०] आरार्तिक्यमन्त्रौ ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

येतीर्त्थानिप्रचरन्तिसृकाहस्तानिषङ्गि-
णं÷ । तेषाꣳसहस्रयोजनेवधन्वानि-
तन्मसि ॥ ५१ ॥ ॐ ३ यज्ञेन यज्ञ-
मयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमा-
न्न्यासन् ॥ ते ह नाकम्महिमानः सचन्त
यत्र पूर्वे साद्ध्याः सन्ति देवाः ॥ ५२ ॥
ॐ ३ राजाधिराजाय प्रसह्यसाहिने, नमो

[५१]प्रदक्षिणामन्त्रः । [५२-५५]बृहत्पुष्पाञ्जलिमन्त्राः माध्यन्दिनीयवेदधर्मेण न पठ्यन्ते इति स्वराभावः कृतः । 'यज्ञेन यज्ञम्' इत्येकस्य प्रयोगे तु स्वराः, ते ७१. मन्त्रे द्रष्टव्याः

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वयं वैश्रवणाय कुर्महे। स मे कामान्कामका-
माय मह्यं, कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु। कुबे-
रायवैश्रवणाय, महाराजाय नमः॥ ५३ ॥
ॐ ३ स्वस्ति, साम्राज्यं भौज्यं, स्वा-
राज्यं वैराज्यं, पारमेष्ठ्यं राज्यं, महा-
राज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात्,
सार्वभौमः सार्वायुष आन्तादापरार्धात्,
पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति, तद-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्येष श्लोकोऽभिगीतो, मरुतः परिवेष्टारो, मरुत्तस्यावसन्गृहे। आवीक्षितस्य काम-प्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति ॥ ५४ ॥

ॐ ३ विश्वतश्चक्षुरुत विश्श्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात् ॥ सम्बा-हुभ्यान्धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जन-यन्देवऽ एक÷ ॥ ५५ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सहस्रशीर्षापुरुषः । सहस्रशीर्षापुरुषꣳ
सहस्राक्षꣳ सहस्रपात् ॥ सभूमिꣳसर्व्व-
तस्पृत्त्वात्त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ ५६ ॥ पुरु-
षऽएव । पुरुषऽएवेदꣳसर्व्वꣳयद्भूतंꣳयच्च्च
भाव्व्यम् ॥ उतामृतत्त्वस्येशानोयदन्ने-
नातिरोहंति ॥ ५७ ॥ एतावानस्य ।

[५६–७१] पौरुषानुवाक (पुरुषसूक्त) मन्त्राः १६, एतेषां विष्णुपूजने देवपूजने विष्णुयज्ञस्वाहाकारे ब्रह्मार्पणे (भोजने) अपि प्रयोगः ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एतावानस्यमहिमातोज्ज्यायाँश्चपूरु -
षः ॥ पादोस्यविश्वाभूतानित्रिपा-
दस्यामृतन्दिवि ॥ ५८ ॥ त्रिपाद्-
ऊर्द्ध । त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषःपादोस्येह-
हाभवत्पुनः ॥ ततोविष्वङ्व्यक्रामत्साश-
नानशनेऽअभि ॥ ५९ ॥ ततोविराट् ।
ततोविराडजायतविराजोऽअधिपूरुषः ॥
सजातोऽअत्यरिच्यतपश्चाद्भूमिमथो-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding: IKS-MoE-Grant-2

पुरः ॥ ६० ॥ तस्माद्यज्ञात् । तस्माद्यु-
ज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतम्पृषदाज्यम् ॥ पशू-
स्ताँश्चक्रे वायुव्यान्आरण्यान्ग्राम्याश्च ये
॥ ६१ ॥ तस्माद्यज्ञात् । तस्माद्यज्ञा-
त्सर्व्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे ॥ छन्दा-
ꣳसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत
॥ ६२ ॥ तस्मादश्वाः । तस्मादश्वाऽ-
अजायन्त ये के चोभयादतः ॥ गावो ह ज-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ज्ज्ञिरेतस्म्मात्तस्म्मांज्जुाताऽअंजुावयं ÷
॥ ६३ ॥ तंयुज्ज्ञम् । तंऽयुज्ज्ञम्बुर्हिषि-
प्प्रौक्षुन्न्पुरुंषञ्जुातमंग्ग्रतः ॥ तेनंदेवा-
ऽअंयजन्तसाद्ध्याऽऋषंयश्चुये ॥ ६४ ॥
यत्त्पुरुंषम् । यत्त्पुरुंषंव्व्यदंधुः कति-
धाव्व्यंकल्प्पयन् ॥ मुखंङ्किमंस्यासीत्त्कि-
म्बाहूंकिमूरूपादांऽउच्च्येते ॥ ६५ ॥
ब्ब्राह्मणोस्य । ब्राह्मणोस्यमुखंमासीद्दबा-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हूरांजुन्न्यू÷कृतः ॥ उरूतदस्स्युयद्वै-
श्श्यं÷पद्भ्यांशूद्रोऽअजायत ॥ ६६ ॥
चन्द्रमामनंसः । चन्द्रमामनंसोजातश्च-
क्षोःसूर्य्योंऽअजायत॥ श्श्रोत्रांद्वायुश्च-
प्राणश्चमुखांदग्निरंजायत ॥ ६७ ॥ ना-
भ्यांऽआसीत् । नाभ्यांऽआसीदन्तारिक्षꣳ
शीर्ष्णोंद्यौश्समंवर्त्तत ॥ पद्भ्यांम्भू-
मिर्द्दिशꣳश्रोत्रात्तथांलोकाँ२ ॥ऽ अंकल्प-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यन् ॥ ६८ ॥ यत्पुरु॑षेण । यत्पुरु॑षेणह॒विषा॑ दे॒वाय॒ज्ज्ञमत॑न्न्वत ॥ व्व॒स॒न्तो॒स्स्यासी॒दा ज्ज्य॑ङ्ग्री॒ष्म्मऽइ॒द्ध्मः श॒रद्ध॒विः ॥ ६९ ॥ स॒प्ता स्स्य॑ । स॒प्तास्या॑सन्न्परि॒धय॒स्त्रिः स॒प्तस॒मि ध॑ः कृ॒ताः ॥ दे॒वायद्द्य॒ज्ज्ञन्त॑न्न्वा॒नाऽअ ब॑द्ध्न॒न्न्पुरु॑षम्प॒शुम् ॥ ७० ॥ य॒ज्ज्ञेन॑य॒ज्ज्ञ म् । य॒ज्ज्ञेन॑य॒ज्ज्ञम॑यजन्तदे॒वास्त्तानि॒ध र्म्मा॑णिप्प्रथ॒मान्न्या॑सन् ॥ तेह॒नाक॑म्महि॒मा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नं॑ः सचन्त॒ यत्र पूर्व्वे॑ सा॒द्ध्याः सन्ति॑ दे॒वाः ॥७१॥

अ॒द्भ्यः सम्भृ॑तः । अ॒द्भ्यः सम्भृ॑तः पृथि॒व्यै रसा॑च्च वि॒श्वक॑र्म्मण॒ः सम॑वर्त्त॒ताग्ग्रे॑ ॥

तस्स्य॒त्त्वष्टा॑ वि॒दध॑द्रू॒पमे॑ति॒ तन्न्मर्त्त्य॑स्स्य-

देव॒त्त्वमा॒जान॒मग्ग्रे॑ ॥ ७२ ॥ व्वेदा॒हम् ।

व्वेदा॒हमे॒तम्पुरु॑षम्म॒हान्त॑मादि॒त्त्यव॑र्ण्ण॒न्त-

म॑सः प॒रस्तात् ॥ तमे॒वव्वि॑दि॒त्त्वाति॑मृ॒त्त्यु-

[७२-७७] उत्तरनारायणमन्त्राः ६; एतेषां ब्रह्मार्पणे (भोजने) पौरुषानुवाकेन सह प्रयोगः।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मौ॑त॒नान्न्यः॒ पन्था॑व्विद्द्य॒तेय॑नाय ॥७३॥ प्र॒जाप॑तिश्च्चरति । प्र॒जाप॑तिश्च्चरति॒गर्ब्भेऽ-अ॒न्तरजा॑यमानोबहु॒धाव्विजा॑यते ॥ तस्स्य॒-योनि॒म्परि॑पश्यन्ति॒धीरा॒स्तस्मि॑म्न्हत-स्त्थु॒र्ब्भुव॑नानि॒व्विश्श्वा॑ ॥ ७४ ॥ योदे॒वे-ब्भ्यः॑ । योदे॒वेब्भ्य॑ऽआ॒तप॑ति॒योदे॒वाना॑म्पु॒-रोहि॑तः ॥ पूर्व्वो॒योदे॒वेब्भ्यो॑जा॒तोनमो॑रु॒चा-य॒ब्ब्राह्म्म॑ये ॥७५॥ रु॒चम्ब्रा॒ह्म्मम् । रु॒च-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

म्ब्राह्म्मञ्जुनयन्तादेवाऽअग्रतदब्ब्रुवन् ॥
यस्त्त्वैवम्ब्राह्म्मुणोव्विद्यात्तस्यदेवाऽअसु-
न्नवशे ॥७६॥ श्रीश्चं। श्रीश्चंतेलक्ष्मीश्चु-
पत्कन्यांवहोरात्रेपार्श्वेनक्षंत्राणिरूपम्-
श्विनौव्व्यात्तम् ॥ इष्णन्निषाणामुम्मऽ
इषाणसर्व्वलोकम्मऽइषाण ॥ ७७ ॥

नमस्त्ते। नमस्त्तेरुद्रमुन्न्यवऽउतोतऽइषवे-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नमः॑ ॥ बा॒हुब्भ्या॑मु॒तते॒नमः॑ ॥ ७८ ॥ या ते॑ । या ते॑ रुद्र शि॒वा त॒नूरघो॒रापा॑पकाशिनी ॥ तया॑नस्त॒न्न्वा॒शन्त॑मया॒गिरि॑शन्ता॒भिचा॑कशीहि ॥ ७९ ॥ यामिषु॑म् । यामिषु॑ङ्गिरिशन्त॒हस्ते॑ बि॒भर्ष्यस्त॑वे ॥ शि॒वाङ्गि॑रित्र॒ताङ्कु॑रु॒माहि॑ꣳसीः॒पुरु॑ष॒ञ्जग॑त् ॥८०॥ शि॒वेन॒व्वच॑सा । शि॒वेन॒व्वच॑सात्त्वा॒गिरि॒शा-

[७८–९३] रुद्रपूजानुवाकः ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

च्छा॑व्वदामसि। यथा॒नः॒ सर्व्व॒मिज्जग॑दय॒क्ष्मꣳ-
सु॒मना॒ऽअस॑त्।८१। अद्ध्य॑वोचत्। अद्ध्य॑वोच
दधिव॒क्ताप्प्र॑थ॒मोदैव्व्यो॑भि॒षक्॥ अही॑ꣳश्च॒-
सर्व्वा॑ञ्ज॒म्भय॒न्त्सर्व्वा॑श्च्चयातुधा॒न्न्यो॒धरा-
ची॒ꣳपरा॑सुव॥८२॥अ॒सौयः। अ॒सौयस्ता॒म्म्रो
ऽअ॑रु॒णऽउ॒तब॒ब्भ्रुः सु॑म॒ङ्गलः॑ ॥ येचै॑नꣳ
रु॒द्राऽअ॒भितो॑दि॒क्क्षुश्श्रि॒ताः स॑हस्स्र॒शोवै॑षा
ꣳहेड॑ऽईमहे॥८३॥अ॒सौयः। अ॒सौयो॑व॒सर्प्प॑-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ति॒नील॑ग्ग्रीवो॒ व्विलो॑हितः ॥ उ॒तैन॑ङ्गो॒पाऽअ॑-
दृश्श्र॒न्नदृ॑श्श्रन्नुदहा॒र्य्यः॑ सदृ॒ष्ट्टोमृ॑डयाति-
नः ॥ ८४ ॥ नमो॑स्त्तु । नमो॑स्त्तु॒नील॑ग्ग्रीवाय-
सहस्स्रा॒क्क्षाय॑मी॒ढुषे॑ ॥ अथो॒येऽअ॑स्स्य॒स
त्त्वा॑नो॒ऽहन्तेब्भ्यो॑कर॒न्नम॑ः ॥८५॥ प्प्रमु॑ञ्च ।
प्प्रमु॑ञ्च॒धन्न्व॑न॒स्त्त्वमु॒भयो॒रात्क्न्यो॒र्ज्ज्या-
म् ॥ याश्च॑ते॒हस्त॒ऽइष॑व॒ः परा॒ताभ॑गवोव्वप
॥८६॥ व्विज्ज्य॒न्धनु॑ः । व्विज्ज्य॒न्धनु॑ः कप॒-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

र्द्दिनो॒व्विश॑ल्ल्यो॒बाण॑वाँ२॥ऽउ॒त॥८७॥ अने॑-
शन्नस्स्य॒याऽइष॑वऽआ॒भुर॑स्स्यनिषङ्ग॒धिः
॥८७॥ याते॑। याते॑हे॒तिर्म्मी॑ढुष्टम॒हस्ते॑ब॒भू-
व॑ते॒धनु॑ः ॥ तया॒स्म्मान्न्वि॒श्वत॒स्त्वम॑य॒-
क्क्ष्मया॒परि॑भुज ॥८८॥ परि॑ते । परि॑ते॒ध-
न्न्व॑नोहे॒तिर॒स्म्मान्न्वृ॑णक्तुव्वि॒श्वत॑ः॥ अथो॒
यऽइ॑षु॒धिस्त्तवा॒रेऽअ॒स्म्मन्निधे॑हि॒तम् ॥८९॥
अ॒व॒तत्त्य॒धनु॑ः । अ॒व॒तत्त्य॒धनु॒ष्ट्वꣳसह॑-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्त्राक्षुशतेषुधे ॥ निशीर्य्यशुल्यानाम्मु-
खाशिवोनः सुमनाभव ॥ ९० ॥ नमस्ते ।
नमस्त्तुऽआयुधायानाततायधृष्णवे ॥ उभा
बभ्याम्मुततेनमोबाहुभ्यान्तवुधन्वने॥९१॥
मानः । मानोमहान्तमुतमानोऽअर्भ्भक-
म्मानऽउक्षन्तमुतमानऽउक्षितम् ॥ मा-
नोवधीः पितरम्मोतमातरम्मानः प्रिया-
स्त्तन्वोरुद्ररीरिषः ॥९२॥ मानः । मानः-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding: KS-MoE-Grant-2

स्तोकेतनयेमानऽआयुषुमानोगोषुमानो-
ऽअश्वेषुरीरिषः॥ मानोव्वीरान्रुद्रभामिनो-
व्वधीर्हविष्मन्तःसदमित्त्वाहवामहे ॥९३॥

आकृष्णेनं । आकृष्णेनरजसाव्वर्त्तमानो-
निवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च । हिरण्ययेनसवि-
तारथेनादेवोयातिभुवनानिपश्यन्न॥९४।

[९४-१०२] नवग्रहमन्त्राः । [९४] सूर्यमन्त्रः ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इमन्दैवाः । इमन्दैवाऽअसपत्नꣳसुवद्ध-
म्महतेक्षत्रायमहतेज्यैष्ठ्यायमहतेजा -
नराज्ज्यायेन्द्रस्येन्द्रियायं । इममुमुष्यं-
पुत्रममुष्यैपुत्रमस्यैविशऽएषवोमीरा-
जासोमोस्माकंम्ब्राह्म्मणानाꣳराजा।९५।
अग्निर्म्मूर्द्धा । अग्निर्म्मूर्द्धादिवः ककुत्प-
तिः पृथिव्याऽअयम् ॥ अपाꣳरेताꣳ ४२।

[९५] सोममन्त्राः ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिजिन्न्वति ॥९६॥ उद्द्बुंद्ध्यस्स्व । उद्-
द्बुंद्ध्यस्स्वाग्ग्ने॒प्प्रति॑जागृहि॒त्त्वमि॑ष्टापू॒र्त्ते-
सꣳ सृ॑जेथाम॒यञ्च॑ । अ॒स्म्मिन्त्स॒धस्त्थे॒ऽ
अद्ध्युत्त॑रस्म्मि॒न्न्विश्वे॑देवा॒यज॑मानश्च्चसी-
दत ॥९७॥ बृह॑स्प्पते॒ऽअति॑ । बृह॑स्प्पते॒ऽ
अति॒यद॒र्य्योऽअर्हा॑द्द्युमद्द्वि॒भाति॒क्क्रतु॑-
म॒ज्जने॑षु ॥ यद्दी॒दय॒च्छव॑सऽऋतप्प्रजात॒-

[९६] मङ्गलमन्त्रः । [९७] बुधमन्त्रः ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तदुस्मासुद्रविंणन्धेहिचित्रम् ॥ ९८ ॥
अन्नांत्परिस्रुतः । अन्नांत्परिस्रुतो-
रसम्ब्रह्मंणाव्यपिबत्क्षत्रम्पयः सोम-
म्प्रजापतिः ॥ ऋतेनसत्त्यमिन्द्रियम्वि-
पानꣳ शुक्रमन्धंसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिद-
म्पयोमृतम्मधुं ॥ ९९ ॥ शन्नः । शन्नोदे-
वीरभिष्टयऽआपोभवन्तुपीतयै । शंय्यो-

[९८] बृहस्पतिमन्त्रः । [९९] शुक्रमन्त्रः ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रभिस्स्रवन्तुनः ॥१००॥ कयानः। कया-
नश्चित्रऽआभुवदूतीसदावृधः सखा ॥
कयाशचिष्ठ्याव्वृता॥१०१॥ केतुङ्कृण्वन्।
केतुङ्कृण्वन्नकेतवेपेशोमर्य्याऽअपेशसे ।
समुषद्भिरजायथाः ॥ १०२ ॥

पं० प्रेम दत्त शास्त्री
जहांगीराबाद २ ३६४
बुलन्दशहर (उ० प्र०)

युञ्जन्तिब्रध्नम्। युञ्जन्तिब्रध्नमरुष-

[१००] शनिमन्त्रः। [१०१] राहुमन्त्रः। [१०२] केतुमन्त्रः ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्चरन्तुम्पारितुस्त्थुषः÷॥ रोचन्तेरोचुनादिवि
॥ १०३ ॥ युञ्जन्त्यस्य । युञ्जन्त्यस्यु-
काम्म्याहरीव्विपक्षसारथे ॥ शोणाधृष्णू
नृवाहसा ॥ १०४ ॥ व्व्रतेनदीक्षाम् ।
व्व्रतेनदीक्षामाप्नोतिदीक्षयाप्नोतिद-
क्षिणाम् ॥ दक्षिणाश्श्रद्धामाप्नोतिश्श्र-
द्द्धयासत्त्यमाप्यते ॥१०५॥ यदाबद्ध्न-

[१०३-१०४] तिलकमन्त्राः— [१०५] वरणमन्त्रः ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न्। यदाबंद्धनन्दाक्षायणाहिरण्यꣳशतानीकायसुमनस्स्यमानाः॥ तन्नमऽआबंद्धनामिशतशारदायायुष्मान्जरदष्टिर्यथासम्॥१०६॥ दीर्घायुस्त्ते। दीर्घायुस्त्तऽओषधेखनितायस्मैचत्त्वाखनाम्यहम्। अथोत्त्वन्दीर्घायुर्ब्भुत्त्वाशतवल्शाव्विरोहतात्॥१०७॥ पुनस्त्त्वा। पुनस्त्त्वादित्यारु-

[१०६] रक्षाबन्धनमन्त्रः। [१०७-१०८] आशीर्वादमन्त्रौः।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

द्रा॒व्वस॑व॒ꣳ समि॑न्धता॒म्पुन॑र्ब्र॒ह्माणो॑व्वसुनी-
थय॒ज्ञैः ॥ घृ॒तेन॒त्त्वन्त॒न्न्वं॑व्वर्द्धयस्स्वस॒-
त्त्याः स॑न्तु॒यज॑मानस्स्य॒कामा॑ꣳ ॥१०८॥

श्रीसूक्तम्

[१] हिर॑ण्यवर्णां॒ हरि॑णीं सु॒वर्ण॑रज॒तस्र॑जाम् ।
च॒न्द्रां हि॒रण्म॑यीं ल॒क्ष्मीं जात॑वेदो म॒ आ व॑ह ॥१०९॥

[१०९-१२४] श्रीसूक्तम् १६ मन्त्राः । लक्ष्मीप्राप्त्यर्थं जप-होमयोः, देवी-पूजायां, श्रीसूक्तमिदमृग्वेदसंहितापरिशिष्टान्तर्गतं माध्यन्दिनीयैरपि प्रयुज्यते। अत्र बहुषु स्थलेषु पाठभेदः उपलभ्यते। स व्यवस्थार्होऽपि नाद्य यावद् व्यवस्थापितो याज्ञिकैः। मम विचारस्तु 'पीयूषे' प्रकाशितो भविष्यति।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh